द्वितीयक समूह की विशेषताएँ
(Characteristics of secondary Group)

classmate

द्वितीयक समूह व्यक्तियों का एक ऐसा बड़ा संगठन है जिसमें अवैयक्तिक संबंध, सीमित सहयोग, मैं की भावना, व्यक्तियों के बीच संघर्षण व व्यक्तिगत स्वार्थों की प्रधानता होती है। द्वितीयक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित है!—

(1) बड़ा आकार (Large size):—
द्वितीयक समूह का आकार प्रायः बड़ा होता है। इसके सदस्यों की संख्या हजारों, लाखों व करोड़ों में होती है। उदाहरणस्वरूप राजनीतिक दल, राज्य, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ, विभिन्न संघ आदि की ओर ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट होता है कि इसका आकार काफी बड़ा होता है।

(2) अप्रत्यक्ष संबंध (Indirect Relation):—
द्वितीयक समूह में अप्रत्यक्ष संबंध पाए जाते है। इसमें भौतिक समीपता नहीं रहती है। फलस्वरूप इनमें व्यक्तियों के बीच अप्रत्यक्ष संबंध बनते है। ये संबंध संचार के साधनों — डाक, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो टेलीविजन के माध्यम से स्थापित होते है। जैसे — राजनीतिक दलों के व्यक्तियों के बीच अधिकांशतः अप्रत्यक्ष संबंध होते है।

(3) औपचारिक संबंध (formal Relation):—
द्वितीयक समूह मे औपचारिक संबंध पाए जाते है। इनके सदस्यों के बीच आत्मीयता व अपनापन नहीं होता। उनके बीच संबंध सिर्फ काम का होता है और परस्पर परिचय भी उतना ही रहता है जितना समूह के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक होता है। जैसे— राजनीतिक दल के बीच पाये जाने वाले संबंध औपचारिक ही है।

④ अवैयक्तिक संबंध (Impersonal Relation):-
द्वितीयक समूह में अवैयक्तिक संबंध पाये जाते है। इनमें सदस्यों की संख्या इतनी अधिक होती है कि वे एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते है, ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत संबंध का प्रश्न ही नहीं उठता। जिन कुछ को हम जानते है, उनमें बहुतों से हमारा संबंध शिष्टाचार तक ही सीमित होता है।

⑤ उद्देश्यों की भिन्नता (No Identity of Ends):-
द्वितीयक समूह में उद्देश्यों की भिन्नता पायी जाती है। ऐसे समूहों में अप्रत्यक्ष औपचारिक व अवैयक्तिक संबंध पाये जाते है। हर एक सिर्फ अपने बारे में सोचते है, अपने हितों की पूर्ती में लगे रहते है, व दूसरों के सुख-दुख का अहसास नहीं होता। फलस्वरूप व्यक्तियों के उद्देश्यों की भिन्नता बनी रहती है।

⑥ मैं की भावना (I Feeling):-
द्वितीयक समूह में मैं की भावना की अधिकता होती है। इसके सदस्यों में घनिष्ठता व अपनापन का अभाव पाया जाता है। हर एक अपने ही बारे में सोचते होते है। फलस्वरूप सभी सदस्य अपने हितों की अधिकतम पूर्ती हेतु आपस में प्रतिस्पर्धा करते रहते है। ऐसे समूहों मे व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान बन जाते है। अतः द्वितीयक समूह में 'मैं की भावना' प्रबल होती है।

⑦ अप्रत्यक्ष सहयोग (Indirect Co-operation):-
द्वितीयक समूह के सदस्यों में अप्रत्यक्ष सहयोग पाया जाता है। सभी सदस्य अपने निर्धारित कार्यों को करते है ताकि समूह का उद्देश्य पूरा हो। यानि ऐसे समूहों में व्यक्ति

समूह हेतु कार्य करते है, ऐसे सहयोग को अप्रत्यक्ष सहयोग कहा जाता है।

(8) जानबुझकर स्थापना (Deliberate Establishment):—
द्वितीयक समूह का निर्माण जान बुझकर किया जाता है। ऐसे समूह विशेष उद्देश्यों की पूर्ती के लिए बनाये जाते है। अतः जब हमारा कोई विशेष उद्देश्य की पूर्ति करना होता है तब जानबुझकर इन समूहों की स्थापना करते है। समाज में जितने भी द्वितीयक समूह है जैसे— राजनीतिक दल, विभिन्न संघ व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि-आदि है, उनकी स्थापना जान बुझकर की जाती है।

(9) सीमित उत्तरदायित्व (Limited Responsibility):—
द्वितीयक समूहो मे व्यक्तियों का उत्तरदायित्व काफी सीमित होता है। इसके दो मुख्य कारण है — (1) इन समूहोंमे घनिष्ठ संबंध का अभाव होता है, और (2) एक निश्चित नियमों के अन्तर्गत ही समूह के सदस्यों के बीच संबंध होते है। अतः इन समूहों में व्यक्ति का उत्तरदायित्व उतना ही होता है जितना नियम के अनुसार निर्धारित होते है। उसके बाद न तो वे जा सकते है और न ही जाने की इच्छा होती है।

(10) परिवर्तनशील (Changeable):—
द्वितीयक समूह परिवर्तनशील होता है। इन समूहो की स्थापना व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार होता है। जब व्यक्तियों की आवश्यकताएँ बदलती है तो इन समूहो का रूप भी बदलता है। इसलिए इसे अपेक्षाकृत अस्थायी समूह भी कहा जाता है।